दूसरी इकाई

गढ़, किले का ही एक प्रकार है । ये सामान्यतः पहाड़ों पर होते हैं । इससे अपने बचाव के साथ शत्रु पर आक्रमण करना भी सरल होता था ।

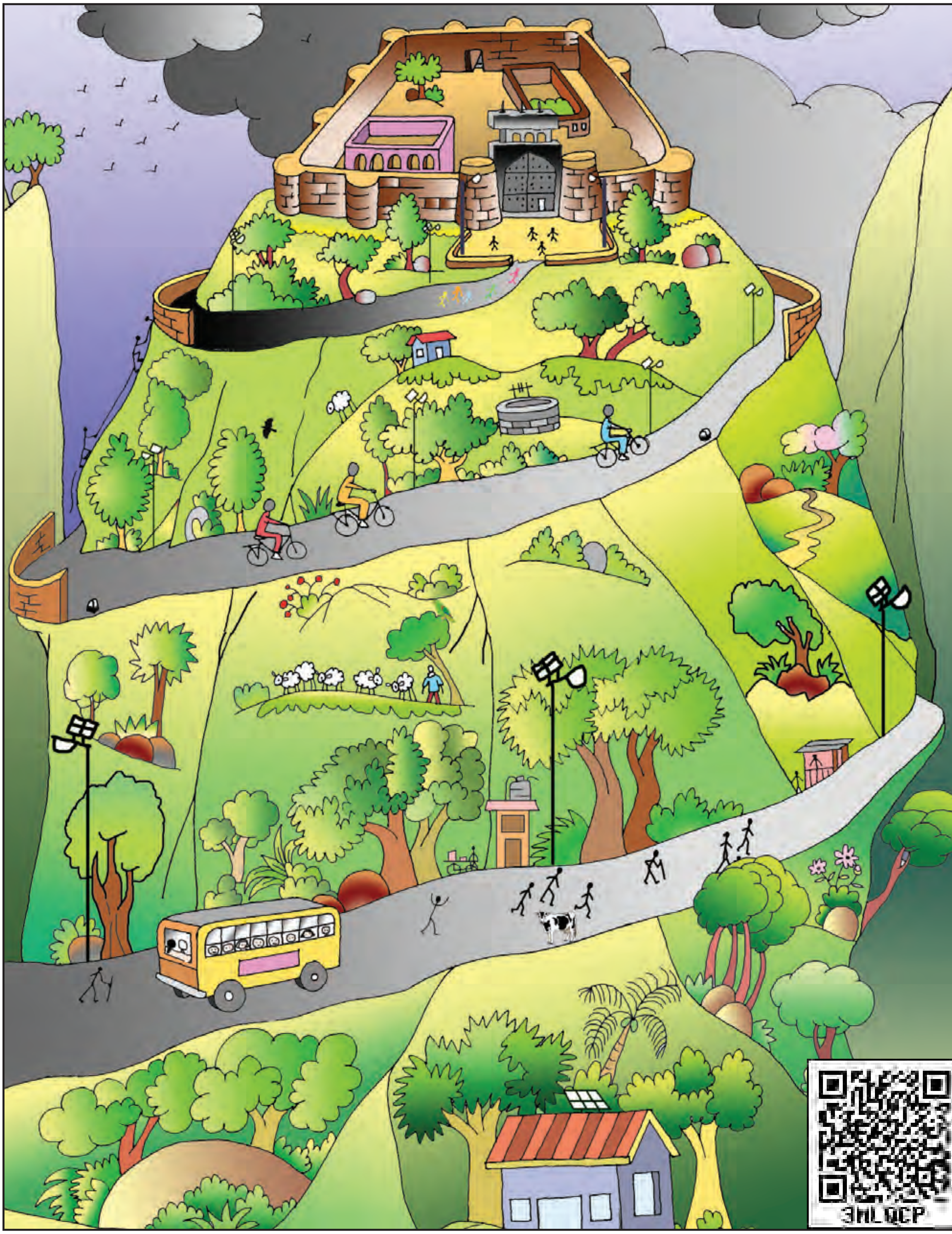

❑ गढ़ और किले में अंतर बताने के लिए कहें । विद्‌यार्थियों से उनके आस-पास के गढ़ों के नाम पूछें । जिले की सांस्कृतिक विरासत के स्थानों/वस्तुओं के बारे में चर्चा करें । उनसे ऐसे स्थानों की सैर करते समय वहाँ की स्वच्छता रखने के संबंध में चर्चा करें ।

• वाचन – पढ़ो और साभिनय गाओ :

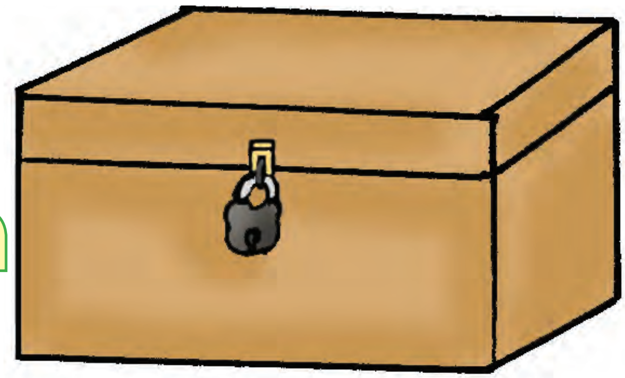

२. अगर

खूब बड़ा–सा अगर कहीं, संदूक एक मैं पा जाता ।
जिसमें दुनिया भर का चिढ़ना, गुस्सा आदि समा पाता ।।

तो मैं सबका क्रोध, घूरना, डाँट और फटकार सभी ।
छीन–छीनकर भरता उसमें, पाता जिसको जहाँ जभी ।।

तब ताला मजबूत लगाकर, उसे बंद कर देता मैं ।
किसी कहानी के दानव को, कुली बना फिर लेता मैं ।।

दुनिया के सबसे गहरे सागर में उसे डुबो आता ।
तब न किसी बच्चे को कोई, कभी डाँटता, धमकाता ।।

– रमापति शुक्ल

❑ कविता का उचित लय–ताल के साथ सस्वर वाचन करके विद्यार्थियों से साभिनय दोहरवाएँ । उन्हें मौन वाचन के लिए समय देकर कविता के लयात्मक शब्द बताने के लिए प्रेरित करें । विद्यार्थियों को निडरता से रहने की प्रेरणा दें । उनसे कोई साहस कथा कहलवाएँ ।

स्वाध्याय हेतु अध्यापन संकेत – प्रत्येक इकाई के स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो', 'पढ़ो' प्रश्नों के लिए सामग्री उपलब्ध कराएँ । यह सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थी स्वाध्याय नियमित रूप से कर रहे हैं । विद्यार्थियों के स्वाध्याय का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' भी करते रहें ।

स्वाध्याय

१. रेडियो पर प्रार्थना, दोहे सुनो और उनमें से अपनी पसंद का सुनाओ ।

२. शहरों के नामों की अंत्याक्षरी खेलो ।

३. हिंदी के किसी लेखक का संस्मरण पढ़ो ।

४. एक वाक्य में उत्तर लिखो :

(क) लड़का कैसा संदूक और किस प्रकार का ताला चाहता है ?

(ख) लड़का किसकी सहायता से संदूक को सागर में डुबो देना चाहता है ?

(ग) संदूक को सागर में डुबोने का क्या परिणाम होगा ?

(घ) लड़का बड़े-से संदूक में क्या बंद करना चाहता है ?

५. आईने के सामने खड़े होकर निम्नलिखित कृतियाँ करो :

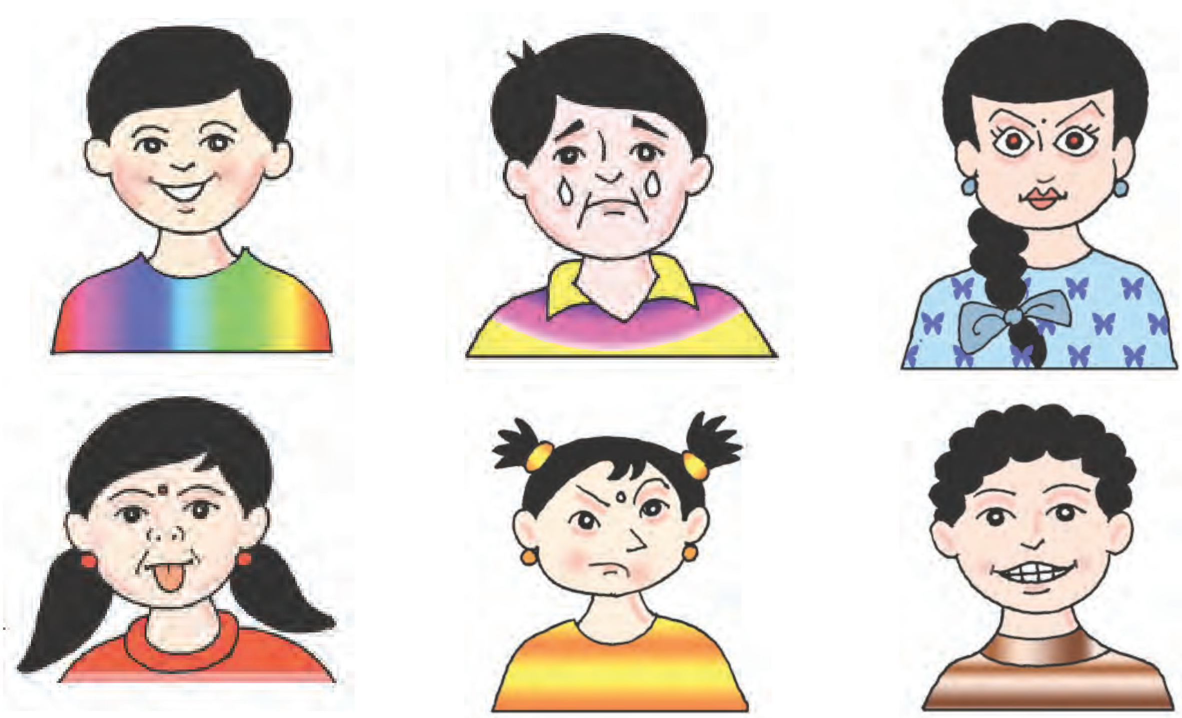

६. माँ ने तुम्हें कूड़ा, कूड़ेदान में डालने के लिए कहा है । तुम नीचे दी गई कृतियों में से क्या करोगे, बताओ :

(च) कूड़ा, कूड़ेदान के बाहर फेंक आओगे ।

(छ) कूड़ा, कूड़ेदान में फेंकोगे ।

(ज) सुनी-अनसुनी करके खेलने भाग जाओगे ।

3HVLEC

● वाचन – पढ़ो और समझो :

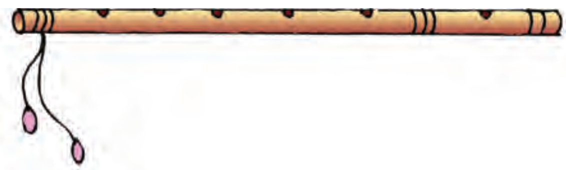

३. जादू

देवपुर का राजा कर्मसेन न्यायप्रिय था परंतु उसे गीत-संगीत में कोई रुचि नहीं थी । अतः राज्य में गाने-बजाने की मनाही थी । उसी राज्य में सत्यजीत नाम का पढ़ा-लिखा, बाँसुरी बजाने में कुशल एक युवक था । एक दिन जंगल में पेड़ के नीचे बैठकर वह बाँसुरी बजाने वाला ही था कि उसे एक घुड़सवार आता दिखाई दिया । अचानक घोड़े का पाँव फिसला और उस पर बैठा व्यक्ति जमीन पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया । वे राजा कर्मसेन थे । सत्यजीत ने राजा को होश में लाने का प्रयत्न किया किंतु उन्हें होश नहीं आया ।

सत्यजीत सोच में डूब गया फिर वह अपनी बाँसुरी निकालकर बजाने लगा । बाँसुरी का मधुर संगीत पूरे वातावरण में गूँजने लगा । पक्षी भी उस मधुर संगीत से आस-पास मँड़राने लगे । तभी उसने देखा, राजा धीरे-धीरे आँखें खोल रहे हैं । सत्यजीत डरकर राजा के पाँव में गिर पड़ा । राजा ने कहा, "युवक, कल तुम हमारे राजदरबार में आ जाना ।"

दूसरे दिन सत्यजीत डरते-डरते राजा के दरबार में पहुँचा । राजा ने कहा, "तुमने कोई गलती नहीं की है । तुम्हारे संगीत के जादू के कारण ही आज मैं जीवित हूँ ।" फिर राजा ने मंत्री से कहा, "आज से हमारे राज्य में गीत-संगीत पर कोई पाबंदी नहीं होगी । सारे राज्य में तुरंत ही यह घोषणा कर दी जाए ।"

–कमलेश तूली

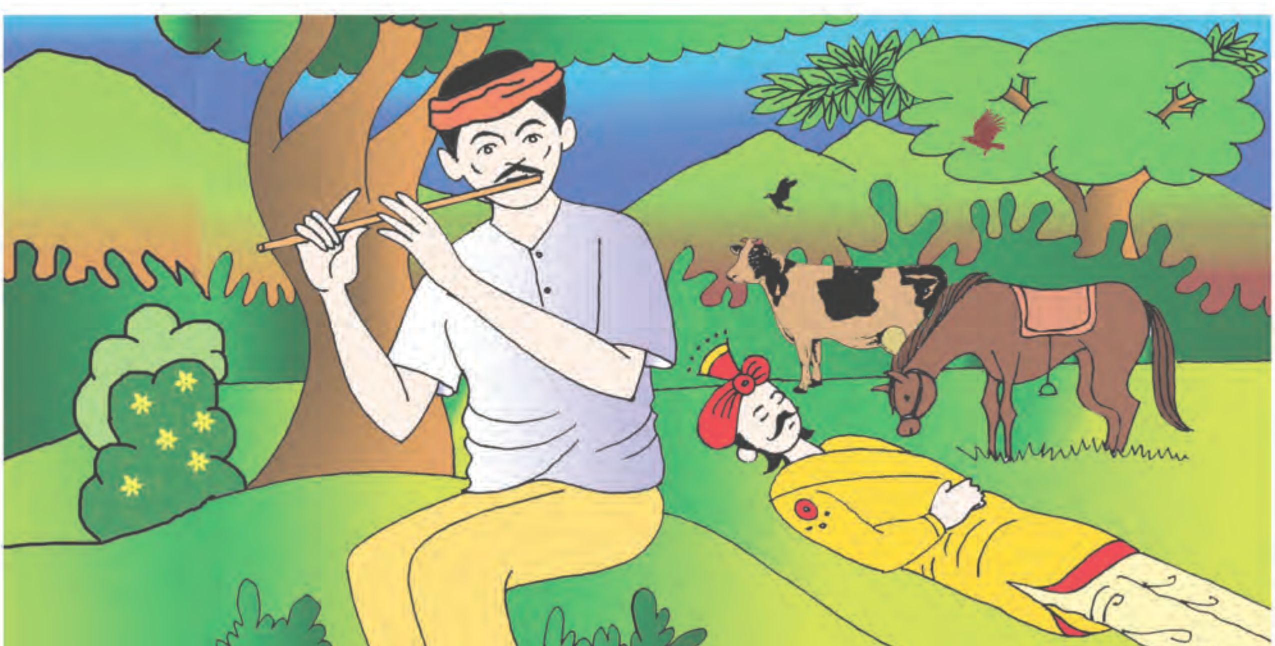

❑ उचित उच्चारण, आरोह, अवरोह के साथ कहानी का वाचन करवाएँ । कहानी के घटनाक्रम पर चर्चा करें । विद्यार्थियों से कहानी को उनके अपने शब्दों में सुनाने के लिए कहें । उन्हें अपनी रुचि के अनुसार कोई वाद्य सीखने हेतु प्रोत्साहित करें ।

स्वाध्याय

१. **परी की कोई कहानी सुनाओ ।**

२. **उत्तर दो :**

(क) राजा कर्मसेन के राज्य में किस बात की मनाही थी ?

(ख) घुड़सवार कौन था ? वह कैसे गिर पड़ा ?

(ग) दूसरे दिन सत्यजीत कहाँ पहुँचा ?

(घ) राजा ने मंत्री से क्या कहा ?

३. **किसी महापुरुष के बारे में पढ़ो ।**

४. **जोड़ी मिलाकर पूरा वाक्य लिखो :**

(च) कर्मसेन	पाबंदी नहीं रहेगी ।
(छ) सत्यजीत	वातावरण में गूँजने लगा ।
(ज) मधुर संगीत	बाँसुरी बजाने में कुशल था ।
(झ) गीत-संगीत पर	न्यायप्रिय था ।

५. **चित्रों को देखकर वाद्यों के नाम बताओ और इनकी ध्वनियों की नकल करो :**

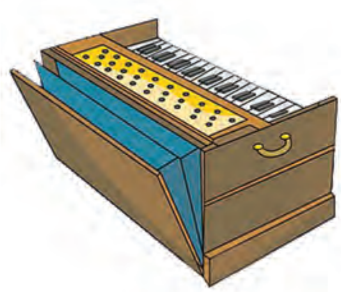

६. **अपनी कक्षा की सजावट कैसे करोगे, इसपर चर्चा करो ।**

● भाषण संभाषण – समझो और बताओ :

४. धरती की सब संतान

जाह्नवी – क्या कर रही हो कृति दीदी ?

कृति – मैं छत पर अनाज के दाने बिखेर रही हूँ ।

जाह्नवी – पर माँ कहती हैं कि अनाज बरबाद नहीं करना चाहिए ।

कृति – जाह्नवी ! मैं अनाज बरबाद करने के लिए नहीं बल्कि पंछियों के खाने के लिए बिखेर रही हूँ ।

जाह्नवी – पंछियों के खाने के लिए ?

कृति – पिता जी कहते हैं कि बारिश के दिनों में अनाज तलाशने के लिए पंछी दूर तक जा नहीं पाते । अनाज डालकर हमें उनकी सहायता करनी चाहिए ।

जाह्नवी – हाँ ! दादी जी भी गरमी के दिनों में पंछियों के लिए मिट्‌टी के बरतन में पानी भरकर रखती हैं । अनेक पंछी हमारी छत पर पानी पीने आते हैं ।

कृति – हाँ जाह्नवी ! हमें पंछियों के लिए दाना-पानी उपलब्ध कराना चाहिए ।

जाह्नवी – सच है, पशु-पक्षी, पेड़ सब धरती माँ की संतान हैं । हमें सबका ध्यान रखना चाहिए और सबसे प्यार करना चाहिए ।

❑ उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ संवाद का वाचन करें । विद्‌यार्थियों से अनुवाचन एवं मुखर वाचन करवाएँ । 'प्राणी एवं अन्न संरक्षण' पर चर्चा करें । वे पक्षियों के लिए क्या-क्या करते हैं, पूछें । उन्हें पक्षी निरीक्षण के लिए प्रोत्साहित करें ।

स्वाध्याय

१. **आज के महत्त्वपूर्ण समाचार सुनाओ ।**

२. **पाठशाला में 'शिक्षक दिवस' कैसे मनाया गया, बताओ ।**

३. **कोई हास्य कविता/ कथा पढ़ो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) छत पर अनाज के दाने कौन बिखेर रही है ?

(ख) जाह्नवी की माँ क्या कहती हैं ?

(ग) दादी जी किसमें पानी भरकर रखती हैं ?

(घ) पशु-पक्षी, पेड़ किसकी संतान हैं ?

५. **चित्रों को पहचानो और इनसे कौन-सा अनाज मिलता है, बताओ :**

६. **अपने दादा जी के बुलाने पर तुम क्या करते हो ?**

(च) 'जी आया' कहकर खेलते रहते हो ।

(छ) तुरंत जाते हो ।

(ज) दो-तीन बार आवाज लगाने पर उत्तर देते हो ।

● मात्रा – मुखर वाचन करो :

५. तिल्लीसिं

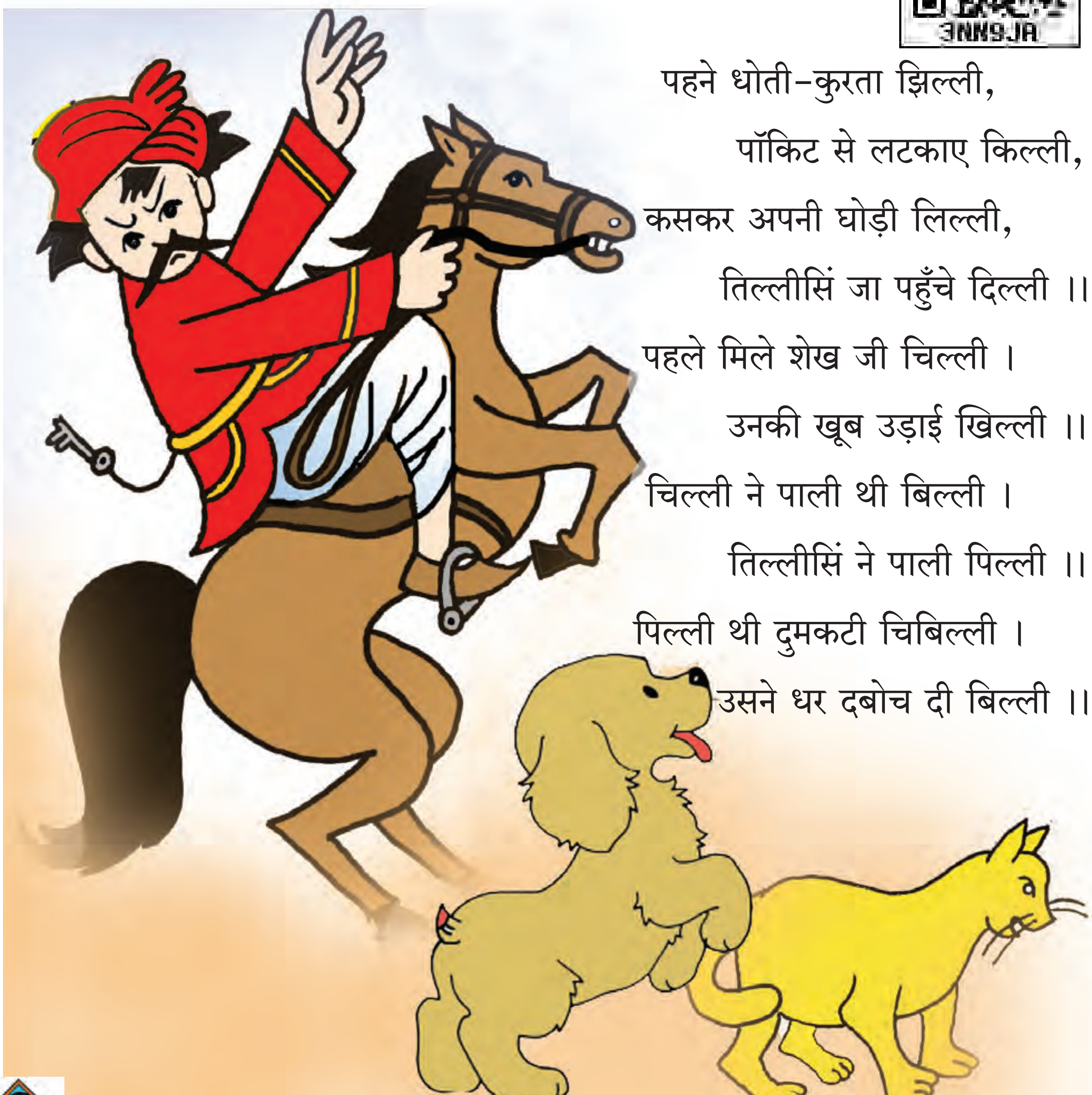

पहने धोती–कुरता झिल्ली,
पॉकिट से लटकाए किल्ली,
कसकर अपनी घोड़ी लिल्ली,
तिल्लीसिं जा पहुँचे दिल्ली ।।
पहले मिले शेख जी चिल्ली ।
उनकी खूब उड़ाई खिल्ली ।।
चिल्ली ने पाली थी बिल्ली ।
तिल्लीसिं ने पाली पिल्ली ।।
पिल्ली थी दुमकटी चिबिल्ली ।
उसने धर दबोच दी बिल्ली ।।

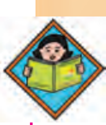

पढ़ो : काका, दादा, अथाह, आहार, आकार, शारदा, शाकाहार, आई, इरा, ढाका, फिर, छिप, नीरा, तीन, नदी, चीनी, चिमटा, धनिया, चटनी, काकी, दीदी, चिड़िया, हिचकी, थिरकी, फिरकी, शिकारी, दीपिका, शारीरिक, टिटिहरी, पिचकारी, फिटकरी, अमरूद, बुनकर, मनुहार, चकनाचूर, ऋचा, मृग, गृह, वृक्ष, कृपया, हृदय, आकृति ।

❑ उचित हाव–भाव, अभिनय के साथ कविता का वाचन करें । विद्यार्थियों से कविता का सामूहिक और गुट में पाठ करवाएँ । पाठ्यांश से तुकांतवाले शब्द ढूँढ़कर लिखने के लिए कहें । 'पढ़ो' में दिए गए शब्दों का वाचन कराएँ और इनका श्रुतलेखन कराएँ ।

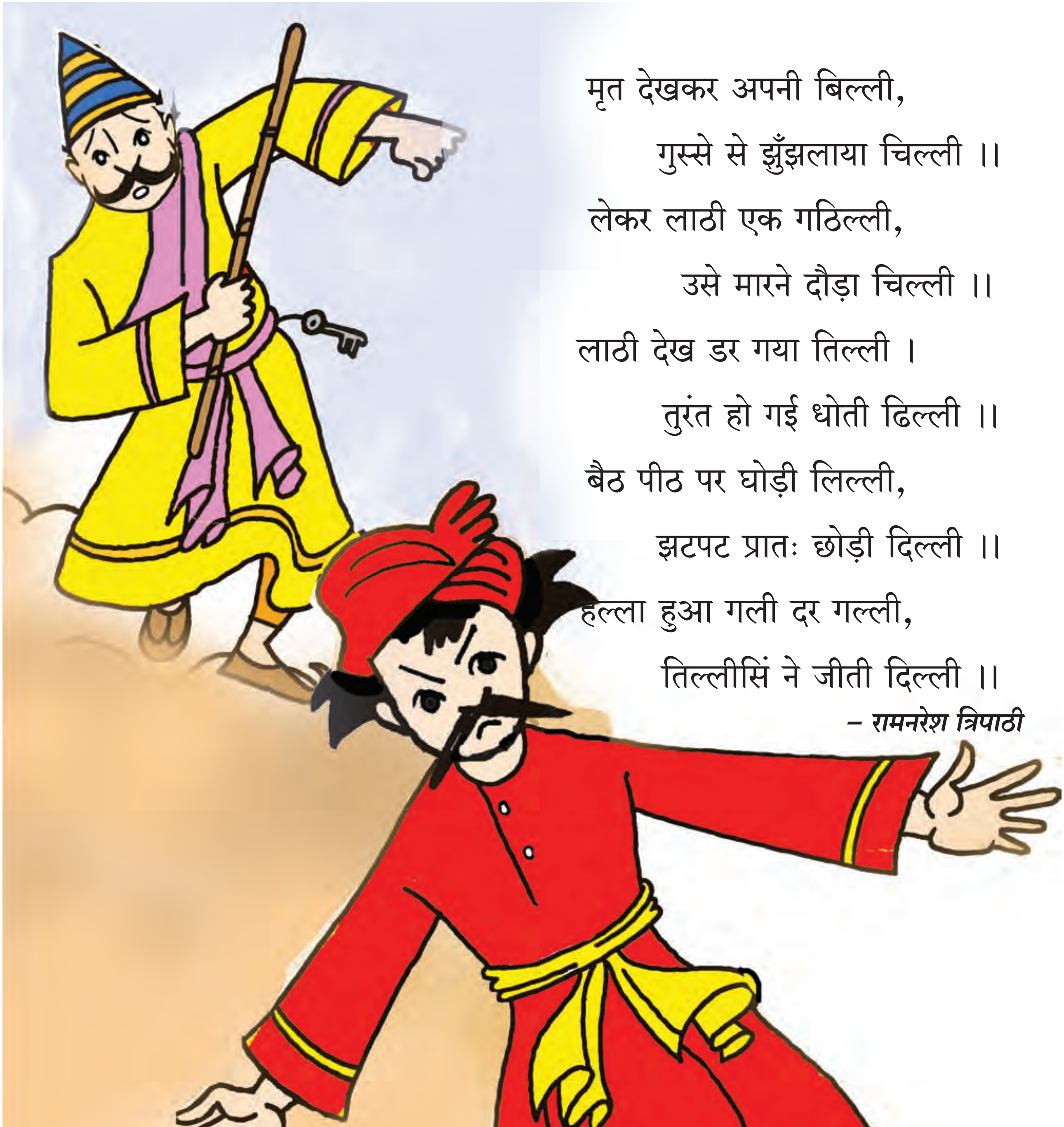

मृत देखकर अपनी बिल्ली,
गुस्से से झुँझलाया चिल्ली ।।
लेकर लाठी एक गठिल्ली,
उसे मारने दौड़ा चिल्ली ।।
लाठी देख डर गया तिल्ली ।
तुरंत हो गई धोती ढिल्ली ।।
बैठ पीठ पर घोड़ी लिल्ली,
झटपट प्रातः छोड़ी दिल्ली ।।
हल्ला हुआ गली दर गल्ली,
तिल्लीसिं ने जीती दिल्ली ।।

– रामनरेश त्रिपाठी

पढ़ो : झनकार, षटकार, वाङ्मय, आराधना, प्राणायाम, दरवाजा, मलयालम, समाचारपत्र, तुअर, जामुन, दूत, सुझाव, सूरज, पपीता, वृषाली, समिति, तमिळ, झिलमिल, सीताफल, डैने, बैठे, खैरे, भैने, पैने, थैले, मैले, ऐरे, कैकेयी, भौंरों, भौंहों, बौनों, तौलो, रौंदो, नौरोज, अंजीर, बंटी, मूँछ, झाँवाँ, लहँगा, अतः, नमः, हॉकी, ऑटोरिक्शा, ऑक्सीजन ।

❑ कविता में आए 'आ' से लेकर 'ऑ' तक के मात्रा-चिह्नों के शब्द ढूँढ़कर लिखवाएँ । विद्यार्थियों से अपनी पसंद के एक ही वर्ण के बारह खड़ीवाले शब्द (कमल, कागज......) बनाकर लिखने के लिए कहें । ऊपर दिए गए शब्दों का सुलेखन करवाएँ ।

● **भाषा प्रयोग– श्रुतलेखन करो :**

६. बोलते शब्द

चूड़ियों की खनखनाहट ।

पत्तों की खड़खड़ाहट ।

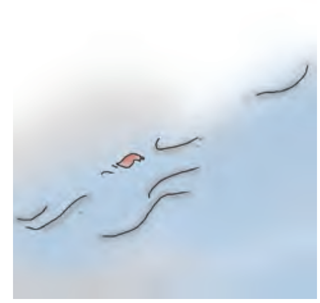

हवा की सरसराहट ।

बादलों की गड़गड़ाहट ।

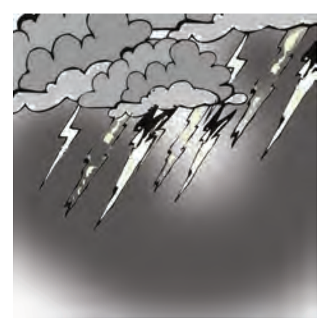

बिजली की कड़कड़ाहट ।

पंखों की फड़फड़ाहट ।

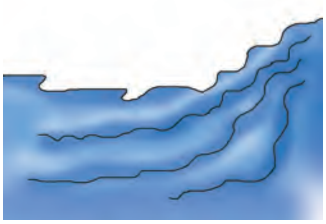

घुँघरुओं की छमछम ।

पानी की कलकल ।

घंटी की टनटन ।

बूँदों की टपटप ।

❑ ऊपर आए शब्दों का मुखर वाचन करें । विद्यार्थियों से लयात्मक शब्द बुलवाएँ और उनका श्रुतलेखन करवाएँ । इसी प्रकार के अन्य शब्द कहलवाएँ । विद्यार्थियों से ऊपर आई ध्वनियों को सुनने और अंतर पहचानकर अपना अनुभव सुनाने के लिए कहें ।

चिड़ियों की चहचहाहट ।

घोड़े की हिनहिनाहट ।

भौंरे की गुनगुनाहट ।

मक्खी की भिनभिनाहट ।

बकरी का मिमियाना ।

सियार का हुआँ-हुआँ ।

कौए की काँव-काँव ।

साँप की फुफकार ।

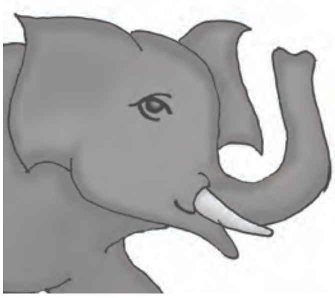

कबूतर की गुटर-गूँ ।

हाथी की चिंघाड़ ।

❑ ऊपर आए शब्दों का विद्‍यार्थियों से मौन वाचन कराएँ । प्राणियों और फेरीवालों की बोलियों पर चर्चा करते हुए उनकी नकल करवाएँ । चित्रों सहित अन्य प्राणियों और उनकी बोलियों, ध्वनियों का संग्रह कराएँ और सूची बनवाएँ । इनका सुलेखन करवाएँ ।

३३ CMYK

● आकलन– बताओ और लिखो :

७. मेरे अपने

चचेरा भाई और चचेरी बहन

स्वयं

ममेरी बहन और ममेरा भाई

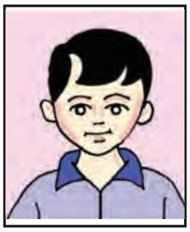

फुफेरा भाई और फुफेरी बहन

मौसेरा भाई और मौसेरी बहन

मेरा नाम............है । मैं अपने और का/की..............

हूँ । (चचेरा भाई/चचेरी बहन) मैं अपने और का/की

.... हूँ । (फुफेरा भाई/फुफेरी बहन) मैं अपने 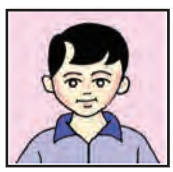 और

का/की............... हूँ । (ममेरा भाई/ममेरी बहन) मैं अपने और

का/की हूँ । (मौसेरा भाई/मौसेरी बहन)

❑ विद्यार्थियों को अपना फोटो चिपकाने और चित्र देखकर सभी रिक्त स्थानों की पूर्ति करने के लिए कहें । दर्शाए गए संबंधों को समझाकर दोहरवाएँ । विद्यार्थियों से पाठ्यांश का वाचन करवाएँ । उनके ममेरे, चचेरे, फुफेरे, मौसेरे भाई-बहनों के नाम लिखवाएँ ।

● शारीरिक शिक्षण – पढ़ो और कृति करो :

८. व्यायाम

विश्राम की मुद्रा में खड़े हो ।

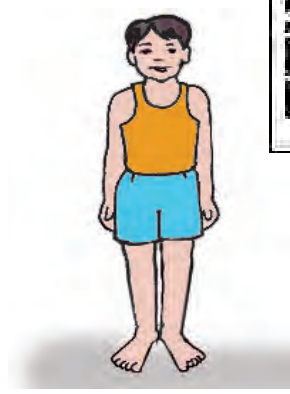

सावधान की मुद्रा में खड़े हो ।

एक पैर पर खड़े हो जाओ ।

दोनों हाथ फैलाकर पीछे झुको ।

अपने हाथ पीछे से
पकड़कर आगे झुको ।

झुककर दाहिना हाथ बाएँ पैर के अँगूठे
पर रखो और बायाँ हाथ ऊपर करो ।

❑ विद्यार्थियों से ऊपर दिए गए चित्रों का निरीक्षण कराएँ । प्रत्येक चित्र के नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़ने के लिए कहें । उपरोक्त सभी कृतियाँ विद्यार्थियों से समूह, गुट एवं एकल रूप में करवाएँ । व्यायाम का महत्त्व और आवश्यकता पर चर्चा करें ।

● काव्यात्मक कथा – सुनो, पढ़ो और लिखो :

९. बीज

किसी नदी के किनारे एक बीज पड़ा था । वह बहुत छोटा था । वहाँ एक चिड़िया आई । वह चोंच मारकर बीज को खाने लगी । तब बीज बोला–

रुकी रहो, रुकी रहो, जमीन में गड़ने दो ।
डाल–पात होने दो, तब मुझे तुम खाना ।

चिड़िया चीं–चीं करती उड़ गई ।

कुछ दिन बाद पानी बरसा । पानी और धूप पाकर बीज में अंकुर फूटा । कुछ दिन बाद वहाँ एक बकरी आई । कोंपलें देखकर उसके मुँह में पानी भर आया । वह उन्हें खाने चली । तब कोंपल ने कहा–

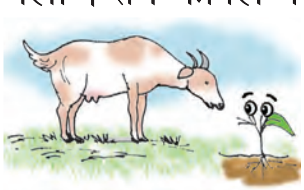

रुकी रहो, रुकी रहो, जड़ को गहरे जाने दो ।
खाद, पानी खाने दो, तब मुझे तुम खाना ।

बकरी यह सुनकर में–में करती चली गई ।

थोड़े दिनों के बाद बीज एक छोटा–सा पौधा बन गया । एक दिन गाय वहाँ आई । उसने पौधे को खाने के लिए मुँह खोला । इतने में पौधे ने कहा–

रुकी रहो, रुकी रहो, डाल–पात होने दो ।
खाद, पानी खाने दो, तब मुझे तुम खाना ।

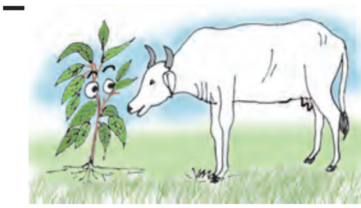

यह सुनकर गाय रंभाती हुई चली गई ।

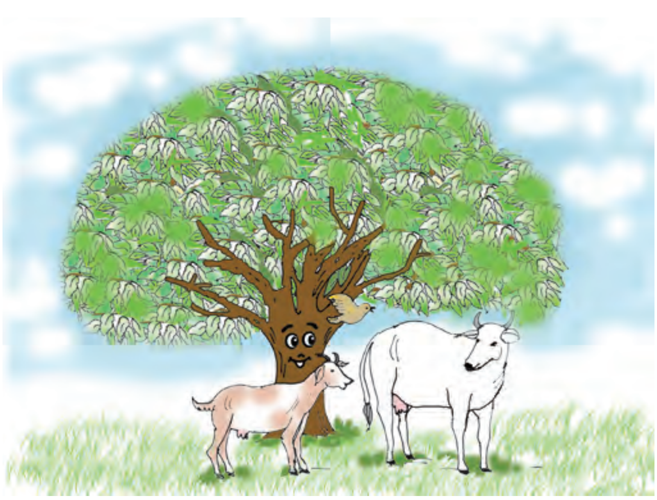

बहुत दिन बीत गए । एक दिन फिर वही चिड़िया, बकरी और गाय वहाँ आ गईं । उन्होंने एक–दूसरे से पूछा, ‘‘वह छोटा पौधा कहाँ गया ?’’ तभी पेड़ बोल उठा– “मैं ही बीज हूँ ..... अंकुर हूँ । मैं ही पौधा हूँ ..... पेड़ हूँ । अब मैं तुम सबके काम आ सकता हूँ ।” यह सुनकर सब खुश हो गए ।

– रामेश्वर दयाल दुबे

❑ उचित उच्चारण, आरोह–अवरोह, लय–ताल के साथ पाठ का वाचन करें । ध्यान से सुनने के लिए कहें । उचित आरोह–अवरोह, लय के साथ सामूहिक, गुट एवं एकल वाचन कराएँ । पाठ में आई कहानी विद्यार्थियों को अपने शब्दों में सुनाने के लिए प्रेरित करें ।

स्वाध्याय

१. छोटा भीम की सीडी देखो और सुनो ।

२. निम्नलिखित शब्दों के विलोम बताओ :

पका, सुबह, छोटी, सुखी, आधा, खोलना, विश्राम, धूप, सही, सूखा, हँसना, खरीदना ।

३. पढ़ो और समझो :

बाण, क्षण, दान, पान, प्राण, मकान, उच्चारण, कान, त्रिकोण, चाणक्य, हृदय, ऋतु, कृपाण ।

४. उत्तर लिखो :

(क) बीज कहाँ पड़ा था ?

(ख) बीज ने चिड़िया से क्या कहा ?

(ग) कोंपलें देखकर किसके मुँह में पानी भर आया ?

(घ) पेड़ की कौन-सी बात सुनकर सब खुश हो गए ?

3PPSQV

५. चित्रों को देखो और बीज से पौधा बनने की प्रक्रिया को क्रम से बताओ :

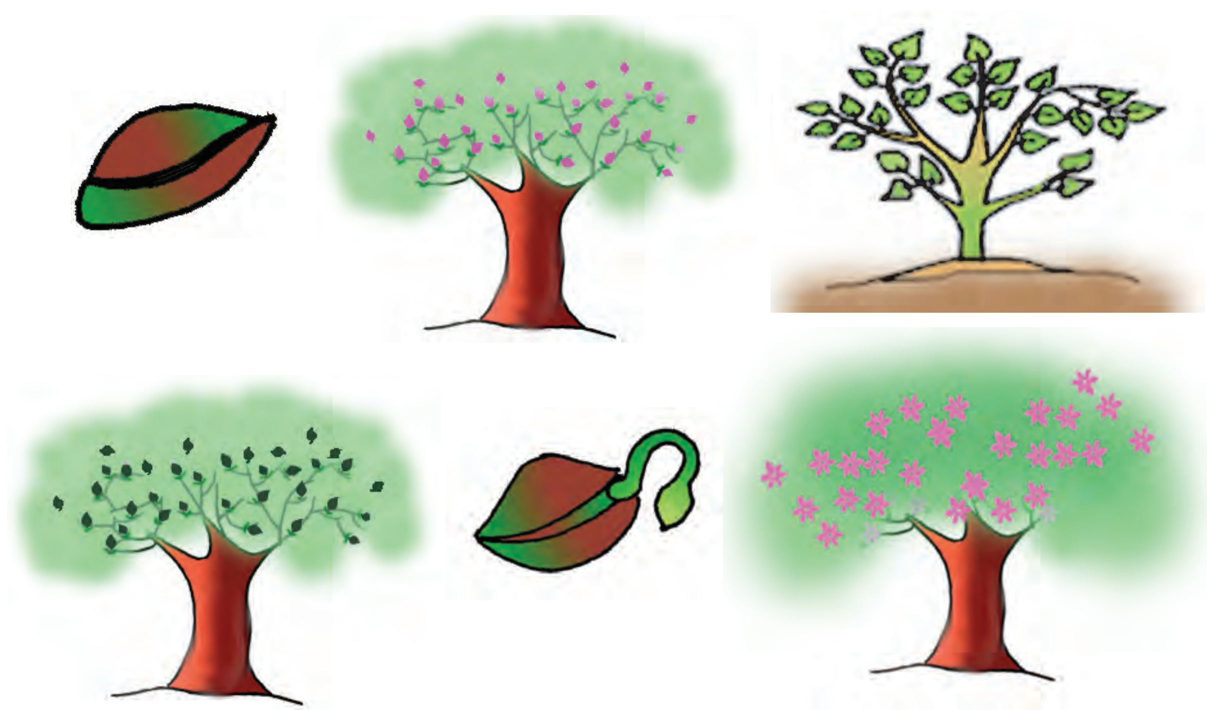

६. पाठशाला की वाटिका में आने-जाने के लिए रास्ता बनाते समय बीच में एक पौधा पड़ रहा है, तुम क्या करोगे ?

● **व्यावहारिक सृजन – पढ़ो और लिखो :**

१०. मीठे बोल

सब बच्चे बहुत खुश थे । आज कॉलोनी में 'दादी-दादा, नानी-नाना दिवस' था । सभी बुजुर्गों को मंच पर आना था और अपने-अपने पोता-पोती या नाती-नातिन पर एक वाक्य अपनी मातृभाषा में बोलना था । बच्चे उनको सुनने के लिए उत्सुक थे ।

सबसे पहले कुंतल की दादी जी मंच पर आईं । वे माइक के पास गईं । उन्होंने कहा, "हमार बबुई बहुत नीक बाटइ ।" अब मेघा के नाना जी की बारी थी । वे बोले, "मोर टूरा अब्बड़ सुघ्घर हवे ।" आशना की नानी जी बोली, "हमार बबूनी बहुत नीक बाड़ी ।" अंत में हितेश के दादा जी बोले, "म्हारो लाडेसर घणो हेत लागे ।" सब बच्चों ने तालियाँ बजाईं । कॉलोनी की सचिव मंगला बहन जी ने बताया कि इन बुजुर्गों ने क्रमशः अवधी, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी और राजस्थानी में अपनी बात कही है । हर बुजुर्ग ने अपनी-अपनी बोली में एक ही बात कही है जिसका अर्थ है मेरी बच्ची बहुत अच्छी है / मेरा बच्चा बहुत अच्छा है।

मुख्य अतिथि ने समझाया कि हर बोली की अपनी मिठास होती है । बोलियाँ भाषा को समृद्ध करती हैं । हमें हर बोली और भाषा का सम्मान करना चाहिए ।

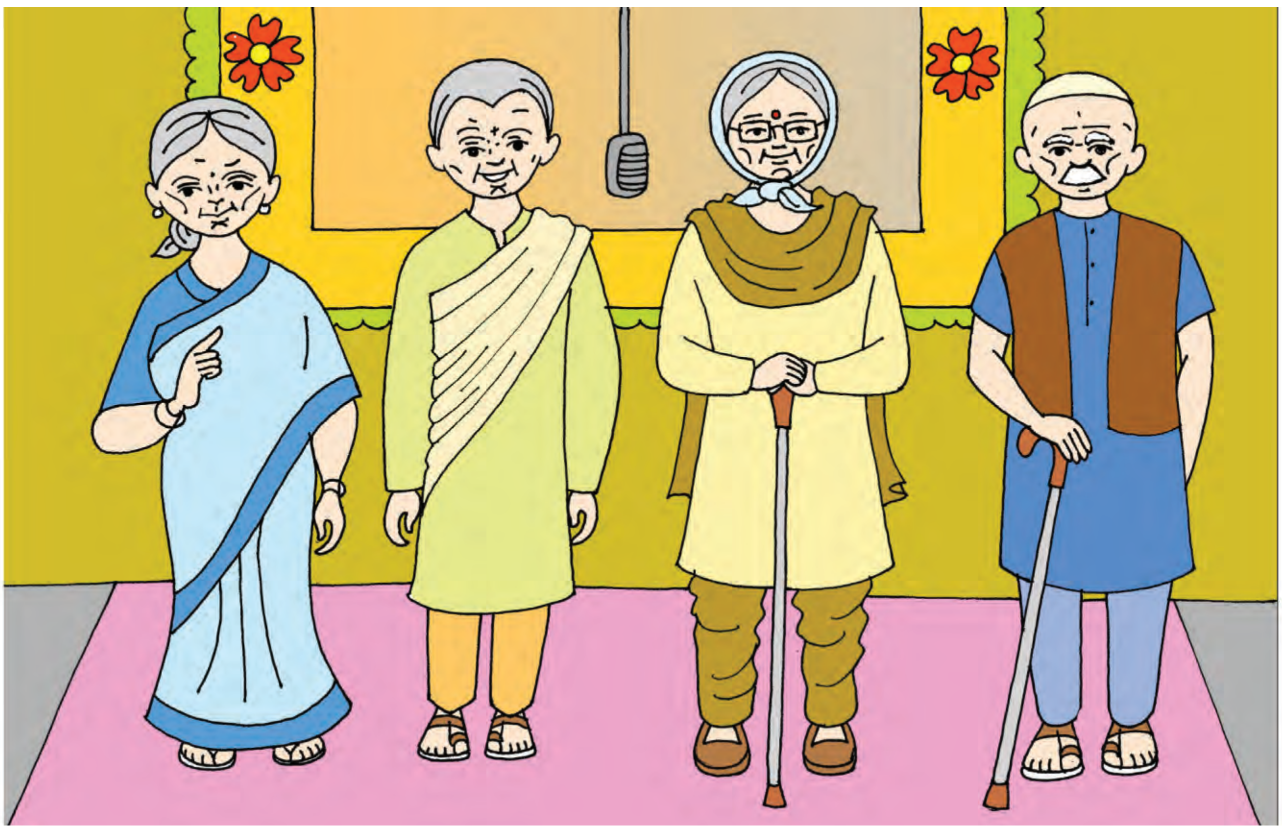

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ पाठ का वाचन करें । एकल एवं सामूहिक रूप में वाचन कराएँ । पाठ में आई हुई बोलियों के शब्दों एवं उनके मानक रूपों पर चर्चा करें । बोली भाषा के प्रति लगाव जागृत करें । मुख्य अतिथि द्वारा कही बात पर चर्चा करें ।

स्वाध्याय

१. **अपनी-अपनी बोली में एक-एक वाक्य सुनाओ ।**

२. **तुम कौन-कौन-सी भाषाएँ पढ़ते हो, बताओ ।**

३. **सुवचनों को पढ़ो और समझो :**

(क) परहित सरिस धरम नहिं भाई ।

(ख) हँसी बड़ी दवाई, खुशी बड़ी कमाई ।

(ग) मीठी बानी, अच्छी बानी ।

(घ) अतिथि देवो भव ।

४. **मानक पर्याय चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :**

(च) .... में जल लाओ । (गगरी/गागर)

(छ) दस .... मुझे दीजिए । (रुपिया/रुपये)

(ज) दीपक .... दो । (बार/जला)

(झ) .... खेती के काम करता है । (बैल/बरधा)

५. **चित्रों को पहचानो और अपनी मातृभाषा में बताओ :**

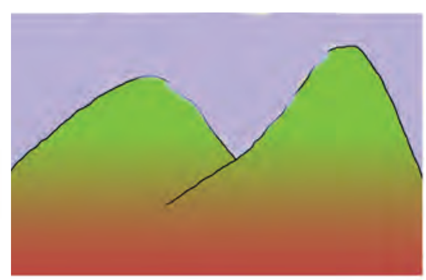

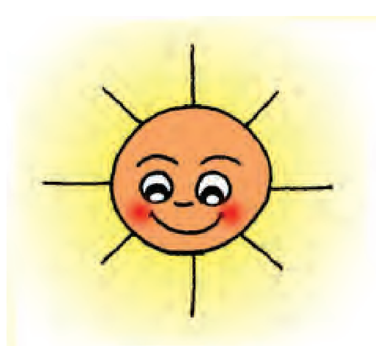

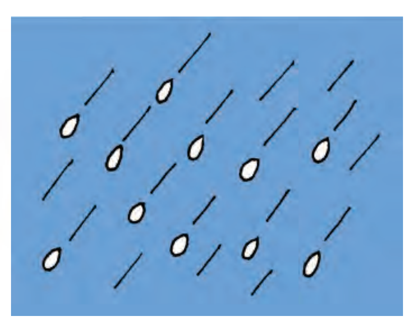

६. **लड़कों का दल पिट्‌ठू खेल रहा है, उनकी सहपाठी नम्रता दूर बैठी उन्हें देख रही है, इस स्थिति में लड़कों को क्या करना चाहिए, बताओ ।**

✻ पुनरावर्तन ✻

✻ बिंदुओं में बारहखड़ी लिखकर जोड़ो और क्रम से बोलो :

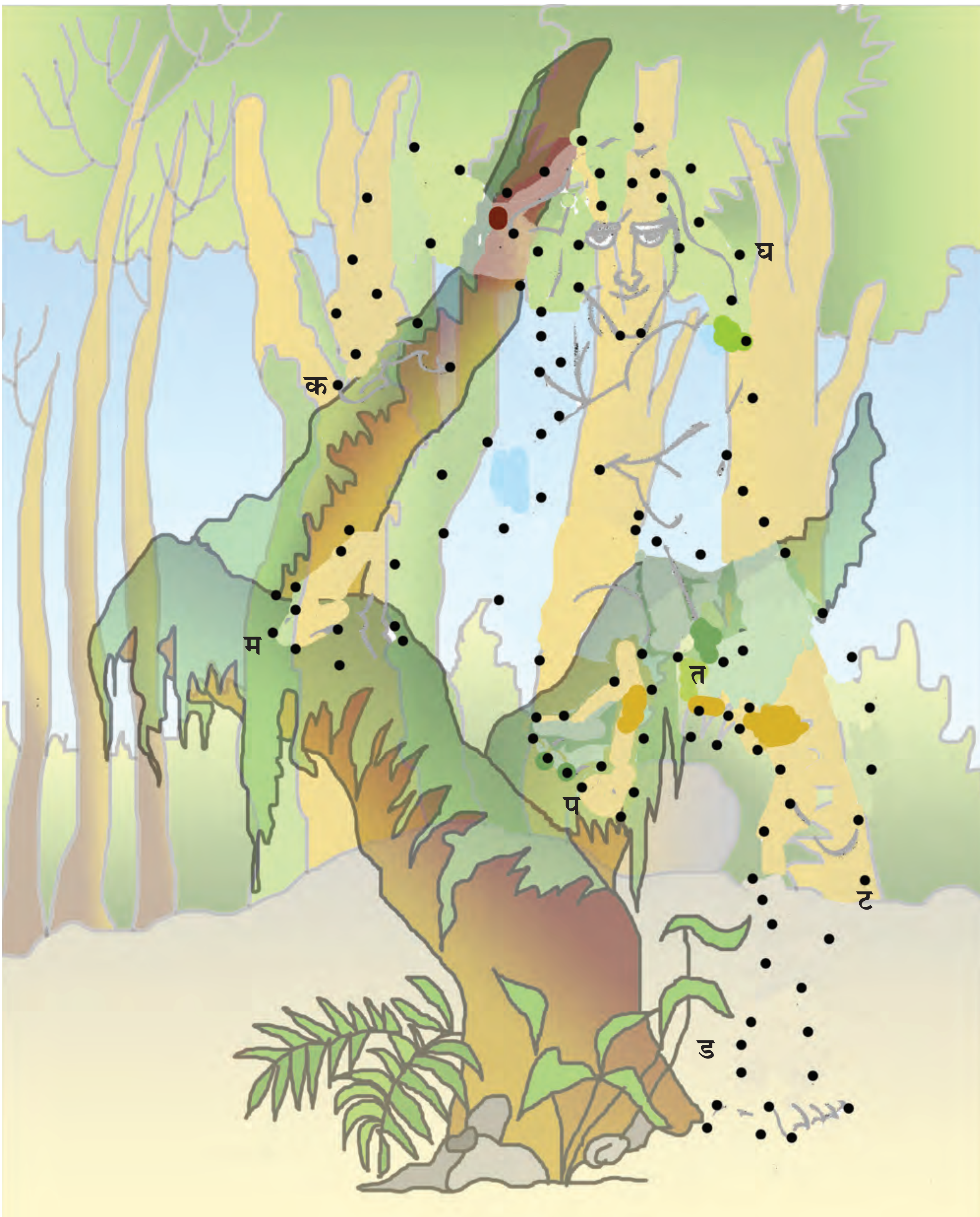

✻ पुनरावर्तन ✻

१. ५१ से १०० तक की संख्याएँ सुनो ।

२. अपने मित्रों का परिचय विस्तार से दो ।

३. हितोपदेश की कहानियाँ पढ़ो ।

४. उचित मात्रा, वर्ण द्‌वारा शब्द सुधारकर लिखो :

बदाम, साबन, मकाण, जादूगार, चीडिया, मटमेला, क्रपया, बिमार, आट, दोड़, घाश, पुसतक ।

५. अक्षर समूह में से खिलाड़ियों के नाम बताओ और लिखो :

ध्या	द	चं	न				
व	शा	ध	जा	बा	खा		
ह	ल्खा	सिं	मि				
म	री	कॉ	मे				
न	र	स	ल	डु	तें	क	चि

उपक्रम

अपने बारे में मित्र/सहेली से सुनो ।	अपनी दो अच्छी और दो बुरी बातें बताओ ।	'संदर्भ सामग्री कोना' में रखी हस्तलिखित पत्रिका पढ़ो ।	नमकीन पदार्थों की सूची बनाओ ।

• चित्रवाचन – देखो, बताओ और कृति करो :

१. रेल स्थानक

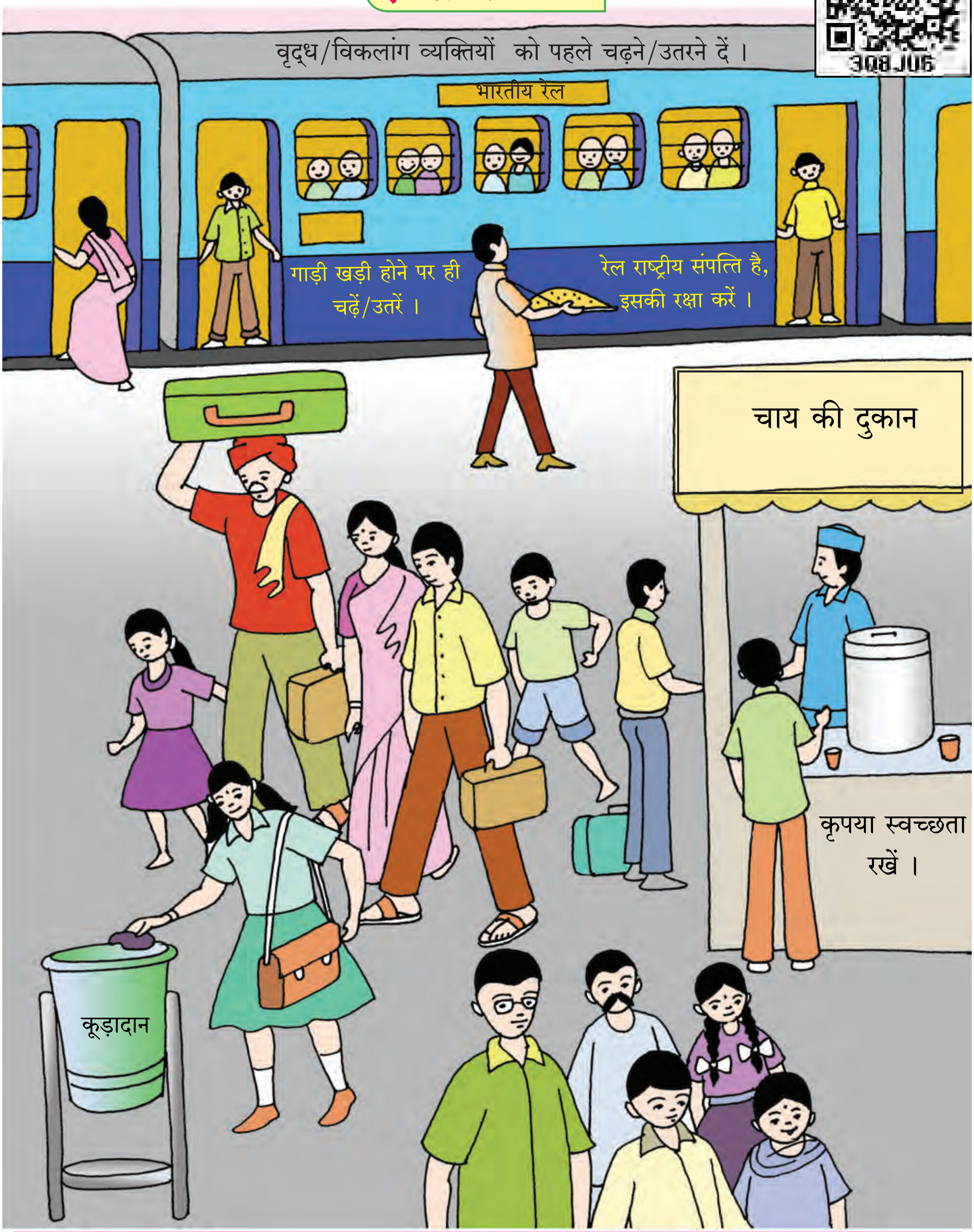

❑ विद्‌यार्थियों से चित्रों का निरीक्षण कराएँ । चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है, प्रश्न पूछें । रेल न होती तो क्या होता, चर्चा कराएँ । जल, थल, वायु यातायात के साधनों का वर्गीकरण कराएँ । सार्वजनिक स्थलों की स्वच्छता के लिए उन्हें प्रेरित करें ।